Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–2 Shalok–34 | श्रीमद् भगवदगीता अध्याय दो–श्लोक चौंतीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 34

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
सम्भावितस्य चाकीर्ति र्मरणादतिरिच्यते ॥ 34॥

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!
यदि तुम इस धर्मयुद्ध से विमुख हो जाओगे, तो लोग तुम्हारी निंदनीय और अविनाशी (सदैव रहने वाली) अपकीर्ति का वर्णन करेंगे। और सम्मानित पुरुष के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी अधिक दुखद होती है।

विस्तृत व्याख्या

इस श्लोक में कृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि युद्ध से पीछे हटने का परिणाम केवल वर्तमान नहीं, बल्कि भविष्य तक फैला हुआ होता है।
यह शिक्षा केवल शरीरिक युद्ध के लिए नहीं, बल्कि जीवन के हर कर्मक्षेत्र के लिए भी लागू होती है।

1. अपकीर्ति का भय—एक स्थायी परिणाम

यहाँ बताया गया है कि यदि कर्तव्य से पलायन किया जाए, तो संसार में उसकी चर्चा दीर्घकाल तक होती रहती है।
लोग अच्छे कर्म भले भूल जाएँ, परंतु कायरता और पलायन की कहानी अक्सर चिरस्थायी होती है।

2. सम्मानित व्यक्ति के लिए अपयश मृत्यु से भी कठोर

जिस व्यक्ति ने सदैव अपने आचरण, शौर्य और कर्तव्य से सम्मान पाया हो, उसके लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी अधिक पीड़ादायक होती है।
स्वाभिमानी मनुष्य के लिए सम्मान जीवन का आधार होता है।

3. कर्तव्य त्याग केवल व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक हानि भी

अर्जुन जैसे वीर के पीछे हटने से केवल उनका निजी सम्मान ही नहीं गिरता, बल्कि समाज भी उसके ideal को खो देता।
श्रेष्ठ पुरुषों के कर्म समाज के मार्गदर्शक होते हैं।

मुख्य बिंदु

- **अपकीर्ति का महत्व** – संसार में निंदा लंबे समय तक रहती है।
- **सम्मान का मूल्य** – सम्मानित व्यक्तियों के लिए प्रतिष्ठा ही सबसे बड़ा धन है।
- **कर्तव्य न निभाने का दुष्परिणाम** – कर्तव्य से पलायन करना अपमान और लज्जा की ओर ले जाता है।
- **शौर्य और सत्यनिष्ठा** – जो व्यक्ति धर्म के लिए खड़ा होता है, वही कीर्ति पाता है।

गूढ आध्यात्मिक अर्थ

जीवन में कठिन परिस्थितियों से मुँह मोड़ना केवल अवसर को खोना नहीं है, बल्कि आत्मसम्मान को भी गिराना है।
आध्यात्मिक दृष्टि से, कर्तव्य-पथ से विचलन व्यक्ति की चेतना में नकारात्मक संस्कार बनाता है, जो आगे जीवन में पीड़ा देता है।
साहस, सत्य और कर्तव्य—ये ही आंतरिक शांति, आत्मबल और मोक्ष के मार्ग प्रशस्त करते हैं।

पदों का भावार्थ

- **अकीर्तिम्** – अपकीर्ति, निंदा
- **भूतानि कथयिष्यन्ति** – लोग वर्णन करेंगे
- **अव्ययाम्** – जो कभी मिटे नहीं
- **सम्भावितस्य** – सम्मानित व्यक्ति के लिए
- **अकीर्तिः मरणात् अतिरिच्यते** – अपकीर्ति मृत्यु से भी अधिक दुखद है

श्लोक का संदेश

जीवन में सम्मान, विश्वास और कर्तव्य का पालन सबसे महत्वपूर्ण है।
कठिन परिस्थितियों में पीछे हटना केवल कायरता नहीं, बल्कि भविष्य में अपयश का कारण भी बन सकता है।
कर्तव्य, साहस और सत्य—ये ही जीवन को ऊँचा उठाते हैं और मनुष्य को अमर कीर्ति प्रदान करते हैं।

RELATED ARTICLE

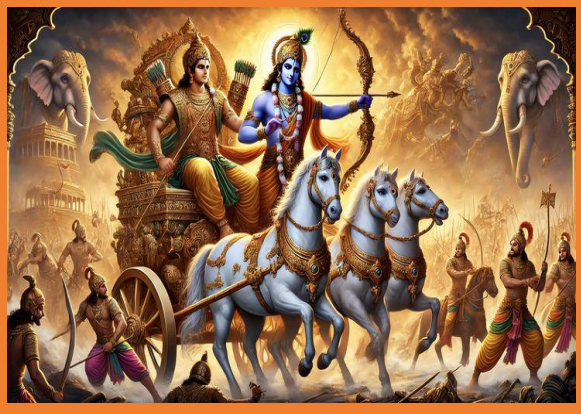

Chapter -2 Shalok – 32

Chapter -2 Shalok – 33

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS